# संस्कृत

**(कक्षा–11)**

**कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2020–21 में विद्यालयों में समय से पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:–**

**खण्ड-क (गद्य)**

**चन्द्रापीडकथा**

(साहं पितृभवने बालतया.....सर्व रमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श)

**खण्ड-ख (पद्य)**

**रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)**

(श्लोक संख्या 27 से 40 तक)

**खण्ड-च (व्याकरण)**

कारक एवं विभक्ति- द्वितीया विभक्ति- अधिशीङस्थासा कर्म, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

स्वर सन्धि- एङिपररूपम्, एङःपदान्तादति।

शब्दरूप- पुल्लिंग- भगवत्, करिन्, पति, सखि, चन्द्रमस्।

स्त्रीलिंग- वाच्, सरित् श्री, स्त्री, अप्।

धातुरूप-परस्मैपद-अस्, नश्, आप्, शक्, इष्, कृष्।

**उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–**

## 33-कक्षा-11 संस्कृत

**(अंक विभाजन)**

**पूर्णांक-100**

**सामान्य निर्देश** - संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जायेंगे । प्रश्नपत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगाः-

**खण्ड-क (गद्य)** 20 अंक

**चन्द्रापीडकथा- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा .....यथार्थमेव नाम कृतवान्। तक।**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर। | 10 अंक |
| 2. | कथात्मक पात्रों का चरित्र चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 अंक |
| 3. | रचनाकार का जीवन परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। | 4 अंक |
| 4. | सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न। | 2 अंक |

**खण्ड-ख (पद्य)** 20 अंक

**रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)- श्लोक संख्या 01 से 26 तक।**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 2. | किसी श्लोक की सन्दर्भसहित संस्कृत में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 3. | कविपरिचय एवं काव्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द) | 4 |
| 4. | काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। | 2 |

**खण्ड-ग (नाटक)** 20 अंक

**अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङकः)**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |
| 2. | पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। | 2+5=7 |

3. कालिदास का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। 4
4. सन्दर्भित नाटक पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। 2

**खण्ड-घ (पत्र लेखन)** 6

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

**खण्ड-ङ (अलंकार)**

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में-अनुप्रास एवं यमक। 4

**खण्ड-च (व्याकरण)**

1. अनुवाद - हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 8
2. कारक तथा विभक्ति। 4
3. समास। 4
4. सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम। 4
5. शब्दरूप। 4
6. धातुरूप। 4
7. प्रत्यय। 2

**निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु**

**खण्ड-क (गद्य)**

महाकविबाणभट्टप्रणीतम् - कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् ''चन्द्रापीडकथा'' का पूर्वार्द्ध भाग- आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा ..... .....यथार्थमेव नाम कृतवान्। तक

**खण्ड-ख (पद्य)**

महाकविकालिदासप्रणीतम्-रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)
श्लोक संख्या 01से 26 तक।

**खण्ड-ग (नाटक)**

महाकविकालिदासप्रणीतम्-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)
प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

**खण्ड-घ (पत्रलेखन)**

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

**खण्ड-ङ (अलंकार)**

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में - अनुप्रास एवं यमक।

**खण्ड-च (व्याकरण)**

**1. अनुवाद -**

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

**2. कारक तथा विभक्ति -**

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान -

(क) **प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)**

(1) स्वतंत्रः कर्त्ता।
(2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(ख) **द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)**

(1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
(2) कर्मणि द्वितीया।
(3) अकथितं च।
(4) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। (वा0)

(ग) **तृतीया विभक्ति (करण कारक)**

(1) साधकतमं करणम्।
(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया।
(3) सहयुक्तेऽप्रधाने।
(4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

(5) येनाङ्गविकारः।

**3. समास –**

निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण-तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

**4. सन्धि –** सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम।

निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान।

**स्वरसन्धि-** (1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः,

(3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः,

**5. शब्दरूप-** निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप -

(अ) पुल्लिंग - राम, हरि, गुरु, पितृ, राजन्, विद्वस्।

(आ) स्त्रीलिंग - रमा, मति, नदी, धेनु, वधू।

**6. धातुरूप-** दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिंग एवं लृट् में रूप।

**परस्मैपद-** भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, प्रच्छ के रूप।

**7. प्रत्यय-** क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत्।

**टिप्पणी**-संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी।